Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

सामाजिक मनोविज्ञान में प्रयुक्त विधियाँ

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 119-125
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

सारांश – प्रयोगात्मक विधि में क्षेत्र प्रयोग तथा प्रयोगशाला आधारित प्रयोग सम्मिलित है। क्षेत्र अध्ययन प्रायः क्षेत्र प्रयोगों के लिए सम्बन्धित चरों की महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध होती है। मनोविज्ञान में प्रयोग दो प्रकार से किये जाते हैं- गुणात्मक तथा परिणामात्मक। गुणात्मक प्रयोगों का मुख्य उद्देश्य प्रयोगों द्वारा मनोवैज्ञानिक तथ्यों की व्याख्या करना, जबकि मात्रात्मक प्रयोगों का उद्देश्य मापन करना है, मात्रात्मक प्रयोगों में मुख्यतः सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया जाता है।

मुख्यशब्द – प्रयोगात्मक, विधि, परिणामात्मक, गुणात्मक, सामाजिक, शारीरिक, बौद्धिक।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, क्योंकि उसे अपने सामाजिक, शारीरिक, बौद्धिक तथा सांस्कृतिक अस्तित्त्व के लिए समाज पर निर्भर रहना पड़ता है। इसे बनाये रखने के लिए आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आस-पास के अनेक व्यक्तियों तथा समूह से अन्तः क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है, व्यक्ति पर इन विचारों, क्रियाओं और व्यवहारों का निरन्तर प्रभाव पड़ता है और जो विज्ञान व्यक्ति के व्यवहारों पर सामाजिक परिस्थितियों के प्रभावों का विश्लेषण तथा अध्ययन करता है, सामाजिक मनोविज्ञान कहलाता है। प्रत्येक व्यक्ति के अलग-अलग विचार, भावनायें, विश्वास, आदर्श एवं कार्यविधियाँ होती हैं, अगर ध्यान से देखा जाय तो इन विषयों की दृष्टि से समूह के सदस्यों में काफी समानता होती है। इन समानताओं के कारणों का पता लगाना सामाजिक मनोविज्ञान का ही कार्य है। यह विज्ञान इन्हीं समानताओं को जन्म देने वाली शक्तियों का विश्लेषण एवं विवरण प्रस्तुत करता है। इस कार्य के लिए सामाजिक मनोविज्ञान को एक ओर समाज की प्रकृति, संरचना, संगठन और अन्तः क्रियात्मक प्रक्रियाओं को समझाना और सुलझाना पड़ता है, तो दूसरी ओर व्यक्ति के मानसिक व शारीरिक आधारों का भी अध्ययन करना होता है। सामाजिक मनोविज्ञान अनेक वैज्ञानिक विधियों का

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्रयोग करके व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन करता है। जिनमें से कुछ प्रमुख विधियों की चर्चा इस पत्र के माध्यम से करने का प्रयास किया जा रहा है।

सामाजिक मनोविज्ञान में विविध विधियों का प्रयोग किया जाता है, जिनमें अवलोकन, सर्वेक्षण, समाजमिति, वैयक्तिक अध्ययन, प्रयोगात्मक इत्यादि प्रमुख हैं।

(1) **अवलोकन**- सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में अवलोकन एक महत्त्वपूर्ण विधि है। इसे प्रेक्षण विधि भी कहते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि समाज मनोविज्ञान व्यवहार का अध्ययन करता है। व्यवहार का वास्तविक अध्ययन निरीक्षण द्वारा ही किया जा सकता है। इसमें मापन की जाने वाली घटना के आयामों का प्रत्यक्ष बोध होता है। हम सभी तथ्यों, घटनाओं तथा अनुभवों को ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ग्रहण करते हैं। शिशुओं, बालक, प्रौढों एवं व्यक्ति के व्यक्तित्व के अनेक पक्षों का ज्ञान अवलोकन द्वारा ही होता है।

किसी घटना अथवा कार्य को ध्यानपूर्वक देखना निरीक्षण है। अतः किसी परिस्थिति में किसी व्यक्ति के कार्य में बाह्य व्यवहार को देखना ही अवलोकन या निरीक्षण है। इसमें नेत्रों के माध्यम से नवीन तथा प्राथमिक तथ्यों एवं सूचनाओं का विचारपूर्ण संकलन किया जाता है। इसके साथ ही इसमें अवलोकनकर्ता देखे जाने वाले व्यक्ति, घटना या समूह के सामाजिक एवं व्यक्तिगत व्यवहारों का अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष निरीक्षण करता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अवलोकन नेत्र के माध्यम से किया गया स्वाभाविक घटनाओं के सम्बन्ध में एक ऐसा क्रमबद्ध एवं विचारपूर्ण अध्ययन है जो कि उनके घटित होने के समय पर किया जाता है।

ऐसी परिस्थितियाँ जहाँ आन्तरिक संरचना में अनेक तत्त्व, चर एवं प्रक्रियाएं क्रियाशील होते हैं, जहाँ जटिल अंतःक्रिया होती है और जिससे उनका मापन अन्य परीक्षाओं से सम्भव नहीं है, वहाँ अवलोकन अधिक उपयोगी होता है। अवलोकन द्वारा एक व्यक्ति या समूह दोनों का ही अवलोकन किया जा सकता है तथा एक समय में एक या अनेक गुणों का निरीक्षण सम्भव है, इसीलिए विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में, कक्षा में, अध्यापक के लोकतंत्रीय व्यवहार में, पशु-पक्षियों के व्यवहार इत्यादि में इस विधि का विशेष महत्त्व है।

अवलोकन विधि को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

(1) प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने के आधार पर
   - (i) प्रत्यक्ष अवलोकन (Direct Observation)
   - (ii) अप्रत्यक्ष अवलोकन (Indirect Observation)

(2) अवलोकन कर्त्ता की सहभागिता के आधार पर
   - (i) सहभागी अवलोकन (Participant Observation)
   - (ii) असहभागी अवलोकन (Non- Participant Observation)

(3) अवलोकन की जाने वाली परिस्थितियों के नियत्रंण के आधार पर

(i) अनियंत्रित अवलोकन (Uncontrolled Observation)

(ii) नियंत्रित अवलोकन (Controlled Observation)

अवलोकन की कुछ सीमाएँ भी हैं। यथा- अवलोकन द्वारा केवल प्रकट तथा बाह्य व्यवहार का ही पता लगाया जा सकता है। इसमें प्राप्त तथ्यों को सिद्ध करना सम्भव नहीं है। इसमें व्यक्ति-निष्ठता अधिक रहती है। वैयक्तिक विभिन्नताओं के कारण मूल्यांकन में अंतर होता है अथवा वस्तुनिष्ठता की कमी होती है। सामाजिक व्यवहारों के अंकन, व्यवस्थीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या में कठनाई आती है।

इस प्रकार इसे निष्पक्ष प्रेक्षक, समस्या का स्पष्ट ज्ञान, अनुभवों को व्यवस्थित लेखन तथा प्रेक्षित घटनाओं का परिमाणन, सांख्यिकीय विश्लेषण तथा प्रेक्षणों एवं प्रेक्षकों की संख्या में वृद्धि आदि अधिक विश्वसनीय तथा वैज्ञानिक बना सकती है।

(2) **सर्वेक्षण (Survey)**- सामाजिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में सर्वेक्षण किसी समस्या से सम्बन्धित सूचनाओं के संकलन की एक महत्त्वपूर्ण विधि है। सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी के दो शब्द sur+vey से मिलकर बना है। 'Sur' (Sor) का अर्थ 'over' तथा 'vey' (veir) का अर्थ 'to look' होता है। इस प्रकार इसका मूल अर्थ 'ऊपर देखना''अवलोकन' अथवा 'अन्वेषण' होता है।

समाजशास्त्र शब्दकोष के अनुसार- "एक समुदाय के सम्पूर्ण जीवन या उसके किसी एक पक्ष के सम्बन्ध में व्यवस्थित और पूर्ण सत्य संकलन और तथ्य विश्लेषण का नाम ही सर्वेक्षण है।"

विटनी के अनुसार- "सर्वेक्षण एक व्यवस्थित प्रयास है जिससे कि एक सामाजिक संस्था, समूह या क्षेत्र की वर्तमान दशा का विश्लेषण, स्पष्टीकरण और प्रस्तुतीकरण किया जाता है।"

सर्वेक्षण उपागम में निम्नलिखित सोपानों का अनुसरण किया जाता है-

1. समस्या को निश्चित तथा स्पष्ट करना।
2. सर्वेक्षण उपकरणों का निर्माण।
3. आंकडों अथवा तथ्यों का संकलन।
4. प्राप्त आंकडों का विश्लेषण।
5. प्रतिवेदन लेखन अथवा प्रस्तुतीकरण।

शिक्षा के क्षेत्र में सर्वेक्षण के निम्न प्रकार हो सकते हैं-

1. विद्यालय सर्वेक्षण (School Survey)
2. जनमत सर्वेक्षण (Public opinion Survey)
3. कार्य विश्लेषण सर्वेक्षण (Job Analysis Survey)
4. प्रलेखी विश्लेषण सर्वेक्षण (Documentary Survey)

5. समुदाय सर्वेक्षण (Community Survey)
6. अनुवर्ती सर्वेक्षण (Follow-up Survey)
7. मूल्यांकन सर्वेक्षण (Appraisal Survey)

सर्वेक्षण अध्ययन में अधिक सूचनाऐं कम खर्च पर तथा कम समय में प्राप्त की जा सकती है, अतः यह एक मितव्ययी उपागम है।सर्वेक्षण द्वारा अध्ययनकर्ता घटनास्थल पर उत्तरदाता के प्रत्यक्ष सम्पर्क में आता है तथा उसे उसके विचारों एवं अन्य तत्त्वों का निकट से अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होता है। सामाजिक सर्वेक्षण एक व्यावहारिक तथा तात्कालिक समस्या समाधान की प्रक्रिया है। वैज्ञानिक रूप से किया गया सर्वेक्षण व्यक्तियों तथा स्थिति से सम्बन्धित परिशुद्ध, वस्तुपरक तथा विश्वसनीय आंकड़ों के संकलन में सहायक है।

सर्वेक्षण की कुछ सीमाएँ भी होती है यथा- सर्वेक्षण द्वारा केवल साधारण एवं व्यावहारिक समस्याओं की ही अध्ययन किया जा सकता है। गहन एवं गम्भीर अध्ययन के लिए यह उपयुक्त नहीं है। इसका क्षेत्र व्यापक है परन्तु अध्ययन गहन व सूक्ष्म नहीं। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में सर्वेक्षण का प्रयोग बहुतायत से होता है। सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने हेतु यह एक महत्त्वपूर्ण विधि है।

(3) **वैयक्तिक अध्ययन (Case study)**-किसी व्यक्ति अथवा समूह का विस्तृत अध्ययन ही वैयक्तिक अध्ययन कहलाता है। इसमें एक व्यक्ति, परिवार, एक समाज, एक समुदाय, एक संस्था या एक कक्षा ही सकती है। जिसका मूल उद्देश्य किसी इकाई का अधिक गहराई से अध्ययन करना होता है, जिससे प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से निष्कर्ष प्राप्त हो सके।

सर्वप्रथम इसका प्रयोग 19 वीं शताब्दी के अंतिम चरण में व्यवस्थित रूप से हुआ। इसका कानून, चिकित्सा, मनोविज्ञान तथा शिक्षा के क्षेत्र में क्रमशः उपयोग किया जाने लगा। समाज शास्त्र के क्षेत्र में इस विधि के माध्यम से एक सामाजिक इकाई के विकास प्रक्रम का क्रमबद्ध अध्ययन, मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रायः एक बालक (समस्याग्रस्त, प्रतिभाशाली या पिछड़ा हुआ) का अध्ययन किया जाता है। मूलतः सभी विषयों के वैयक्तिक अध्ययन का स्वरूप व योजना एक जैसी होती है। इसकी विशेषताएँ देखी जाएँ तो इसमें एक समय पर एकल इकाई का ही अध्ययन किया जाता है। इसमें क्रमबद्ध, गहन एवं गुणात्मक अध्ययन किया जाता है। इसमें कार्य-कारण सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। इसमें किया जाने वाला अध्ययन दीर्घकालीन एवं बहुपक्षीय होता है। वैयक्तिक अध्ययन के निम्न प्रकार हो सकते हैं-

1. अनुगामी प्रकार का वैयक्तिक अध्ययन (Follow-up type Case study)
2. सामाजिक/सामूहिक वैयक्तिक अध्ययन (Community Case study)
3. क्रियात्मक विश्लेषण व्यक्ति अध्ययन (Activity Analysis Case study)

4. प्रवृत्तियों का अध्ययन (Study of Trends)
5. कारणों का तुलनात्मक वैयक्तिक अध्ययन (Comparative Case study)
6. विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis)

वैयक्तिक अध्ययन की भी कुछ सीमाएँ हैं। जैसे- इसमें केवल चयनित और बहुत ही कम इकाईयों का अध्ययन कर पाते हैं। इसके माध्यम से सम्बन्धित इकाई के गहन अध्ययन के प्रति केवल गुणात्मक सामग्री ही उपलब्ध होती है, मात्रात्मक नहीं। अतः इसके आधार पर वस्तुपरक सामान्यीकरण करने में विशेष कठिनाई आती है। इस विधि द्वारा प्राप्त सूचना या अभिलेखन कई बार दोषपूर्ण भी रहता है, क्योंकि प्रायः व्यक्तिगत सम्पर्क या साक्षात्कार का स्वरूप विस्तृत तथा दीर्षकालीन होता है। इतने अंतराल में अभिलेखन यथावत नहीं रहता। स्मृति दोष, व्यक्तिगत पक्षपात एवं पूर्वाग्रहों के कारण भी अभिलेखन में दोष आ जाते हैं। इस प्रकार इस विधि में वैज्ञानिक, तर्कसंगत एवं वैध सूचनाओं के संकलन हेतु दक्ष एवं कुशल अध्ययनकर्ता हो तथा आवश्यकता होने पर दो या अधिक शोधकर्ता अध्ययन को अधिक तुलनीय या विश्वसनीय बना सकते हैं।

(4) **समाजमिति (Socimentry)**-समाजमिति एक महत्त्वपूर्ण विधि है जिसका सामाजिक मनोविज्ञान में बहुत प्रयोग होता है। यह एक समूह की बनावट का अध्ययन करने और प्रत्येक समूह में सदस्य का स्तर मापने, समूह के अंतर्सम्बन्धो तथा सामाजिक वातावरण का पता लगाने में सहायक है। यह अनौपचारिक सामाजिक स्थितियों व समूहों में व्यक्तियों के विशिष्ट अंतर-वैयक्तिक सम्बन्धों के परीक्षण, प्रेक्षण, अभिलेखन एवं मापन की एक महत्त्वपूर्ण विधि है।इसके अंतर्गत एक समूह से सम्बन्धित व्यक्तियों के एक विशेष आधार पर पारस्परिक आकर्षणों (Attraction), प्रतिकर्षणों (Repulsions) व उदासीनताओं (Indifference) की प्रतिक्रियाओं द्वारा सम्बन्धित समूह की संरचना, समरसता (Cohesiveness), नेतृत्व, पूर्वाग्रह व मनोबल आदि के स्वरूप का अध्ययन एवं मापन किया जाता है।

समाजमिति विधि की कुछ विशेषताएँ हैं, जैसे- इस विधि द्वारा एक समूह या अनेक समूहों में व्यक्तियों के विशिष्ट अंतर-वैयक्तिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। इस विधि द्वारा व्यक्तियों के अंतर्सम्बन्धों के गुणात्मक स्वरूप को वस्तुपरक तथा मात्रात्मक स्वरूप प्रदान किया जाता है। इस विधि का व्यक्तियों के अंतर्सम्बन्धों के अध्ययन में विशेष बल सामाजिक पक्ष से रहता है, अन्य पक्षों से नहीं।

समाजमिति विधि का उपयोग विद्यालय, कक्षाओं, विभागों, समुदायों, कारखानों, कारीगरों, शिविरों इत्यादि में व्यक्तियों के लोकप्रिय नेता के चयन, सम्प्रेषण के साधन, मनोबल के अध्ययन, समूह संरचना, सामूहिक समरसता व उसमें सक्रिय गुटों व शक्ति गुटों आदि के अध्ययन के लिए विशेष रूप से किया जाता है। विद्यालय में समाजमिति के अनेक उपयोग हैं, जैसे- कक्षा में समूहों को व्यवस्थित करने, कक्षा में समाजिक वातावरण निर्मित करने, विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन को अच्छा को अच्छा इत्यादि। इस विधि द्वारा समूह की समरसता (Cohesiveness) का ज्ञान होता है।

समाजमिति तकनीकी के प्रकार (Types of Sociometry)-

1. समाजमिति स्वनिर्धारण अथवा सम्बन्धात्मक विश्लेषण (Sociometric Self Rating Analysis)
2. समूह वरीयता अभिलेख (Group Preference Record)
3. सामाजिक दूरी स्केल (Social Distance Scale)
4. सामाजिक स्वीकृति स्केल (Social Acceptance Scale)
5. समूह सहभागिता मापनी (Group Participation Scale)
6. समयाविधि अंकन विधि (Estimates of Time Method)
7. बहुसम्बन्धी समाजमिति सर्वेक्षण (Multi Relational Sociometric Survey Method)
8. बताओ कौन प्रविधि (Guess Who Technique)

(5) **प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)-**

प्रयोगात्मक विधि एक ऐसी विधि है, जिसमें दो या अधिक चरों के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।

प्रयोग में आश्रित चर पर स्वतंत्र चर या प्रयोगात्मक चर के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। अतः वह विधि जो प्रयोगों पर आधारित हो, प्रयोगात्मक विधि कहलाती है अथवा प्रयोग विधि पर आधारित अध्ययन ही प्रयोगात्मक विधि है।प्रयोगात्मक विधि एक वैज्ञानिक विधि है, अतः इसकी कसौटी का आधार भी वैज्ञानिक विधि के अनुसार है-

1. वस्तुनिष्ठता
2. सत्यापन क्षमता
3. निश्चयात्मकता
4. भविष्यकथन क्षमता

प्रयोगात्मक विधि की कुछ विशेषताएँ होती हैं, जैसे- प्रयोगात्मक विधि में प्रयोगकर्ता अपनी इच्छानुसार घटना का निर्माण कर सकता है, जिसके फलस्वरूप वह सही निरीक्षण के लिए पूर्ण रूप से तैयार रहता है। प्रयोग द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के सत्यापन के लिए प्रयोगकर्ता पूर्व परिस्थितियों में ही फिर से निरीक्षण कर सकता है तथा प्रयोग की परिस्थितियों की व्याख्या कर सकता है। समाज मनोविज्ञान के प्रयोगात्मक अध्ययन करने में सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग प्रदत्त सामग्री या आंकडों के विश्लेषण आदि में कर सकते हैं।

प्रयोगात्मक विधि में क्षेत्र प्रयोग तथा प्रयोगशाला आधारित प्रयोग सम्मिलित है। क्षेत्र अध्ययन प्रायः क्षेत्र प्रयोगों के लिए सम्बन्धित चरों की महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध होती है। मनोविज्ञान में प्रयोग दो प्रकार से किये जाते हैं- गुणात्मक तथा परिणामात्मक। गुणात्मक प्रयोगों का मुख्य उद्देश्य प्रयोगों द्वारा मनोवैज्ञानिक तथ्यों की व्याख्या करना, जबकि मात्रात्मक प्रयोगों का उद्देश्य मापन करना है, मात्रात्मक प्रयोगों में मुख्यतः सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया जाता है।

सन्दर्भग्रन्थसूची-

1. बघेला, डी.एस (1995) सामाजिक मनोविज्ञान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
2. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ (1997) सामाजिक मनोविज्ञान की रूपरेखा, किताब महल, इलाहाबाद।
3. प्रसाद, नगीना (1981) समाज मनोविज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद।
4. रस्तोगी, घनश्याम दास (1980) आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान, टाटा मेक्ग्रा हिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली।
5. शर्मा, कुमुद एवं त्रिवेदी, देवीदीन, सामाजिक मनोविज्ञान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ।
6. श्रीवास्तव, पाण्डे सिंह (1994) आधुनिक समाज मनोविज्ञान, हर प्रसाद भार्गव शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन, कचहरी घाट, आगरा।
7. त्रिपाठी, डी. लाल बचन (1992) आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान, हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन, आगरा।
8. Freemen F.S, : Psychology Testing (Oxford) 1960.
9. Young P.V, : Scientific Social Surveys and Research , (Prentice-Hall)
10. Roy, P.N., : An Introduction to Research Methods applied to Psychology, Sociology and Education.